

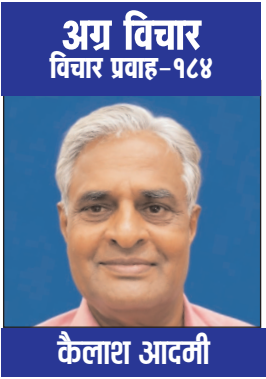
शिक्षा नीति २०२० नई, तस्वीर पुरानी। चढ़ नहीं पाई, नई पीढ़ी की जुबानी।।

शिक्षक दिवस पर मैं विशेषकर तीन-चार लोगों को विशेष रूप से याद कर लेता हूँ जिनमें प्रथम नाम है डॉ. ब्रह्मदेव शर्मा, दूसरा सुरेंद्र नाथ दुबे, तीसरा डॉ. हुकुमपाल सिंह विकल और चौथा गंगा प्रसाद गुप्ता जो मप्र व्याख्याता संघ के संस्थापक रहे तथा जिनकी स्मृति में निर्दलीय प्रकाशन प्रतिवर्ष शिक्षा जगत से जुड़े विद्वानों को अपनी स्थापना दिवस पर सम्मानित करता है।

डॉ. ब्रह्मदेव शर्मा भारतीय प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ अधिकारी रहे तथा सलाहकार सह संरक्षक के नाते निर्दलीय प्रकाशन से जुड़े रहे जबकि हुकुमपाल सिंह विकल भी सलाहकार होने के साथ ही मुझे साहित्य व शिक्षा के क्षेत्र में कदम-कदम पर मार्गदर्शन करते थे और सुरेंद्र नाथ दुबे का नाम शिक्षाविदों में आज भी बड़े आदर के साथ लिया जाता है। वे भी निर्दलीय प्रकाशन के सलाहकार सह संरक्षक रहे।

श्री दुबे ऐसे शिक्षाविद थे जिनकी सेवाओं को देखते हुए मानव संसाधन मंत्री अर्जुन सिंह ने वर्ष १९९४-१९९६ के मध्य विशेष कर्तव्यस्थ अधिकारी के रूप में नई दिल्ली बुलाकर अपने साथ रखा तथा उनकी समय-समय पर सलाह लेते थे जिससे उन्हें शिक्षा का संस्कारिक स्वरूप रखने में मदद मिलती थी। श्री दुबे शिक्षक संदर्भ समूह से भी उसके स्थापना काल से जुड़े रहे जो मप्र में शिक्षकों के कल्याण के लिए दामोदर जैन के नेतृत्व में कार्यरत है। श्री जैन बताते हैं कि श्री दुबे लंबे समय तक मध्य प्रदेश राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद में शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में सक्रिय रूप से कार्यरत रहे।

श्री दुबे ने राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान नई दिल्ली से जुड़कर शिक्षकों के कल्याण के लिए काम किया तथा मध्य प्रदेश के अनेक जिलों में शिक्षक सदन का निर्माण रुचि पूर्वक कराया। श्री दुबे जब राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद भोपाल में कार्यरत थे तो वे समन्वयक के साथ ही शैक्षिक पत्रिका ‘पलाश’ के सम्पादक रहे। वे स्टेट बोर्ड ऑफ टीचर एजुकेशन के सचिव होने के साथ ही स्कूल शिक्षा मंत्री महेंद्र सिंह कालू खेड़ा और इंद्रजीत कुमार के अकादमिक सलाहकार रहे। वर्ष २००१ में सेवा निवृत्त होने के बाद श्री दुबे ‘स्कूल शिक्षा’ पत्रिका का प्रकाशन का सपना संजोए शिक्षकों के अकादमिक उन्नयन के लिए सक्रिय प्रयास करते रहे और मई २०१० से आपने मासिक पत्रिका स्कूल शिक्षा का प्रकाशन शुरू किया। विगत ८ मार्च २०२६ को भोपाल में देहावसान के पूर्व श्री दुबे ने इसका प्रकाशन निर्दलीय प्रकाशन भोपाल/नई दिल्ली को सौंप दिया जिसका संपादन मैं उनके अनुज डॉ. त्रिभुवन नाथ दुबे और उनकी बेटी श्रीमती अंजु



अग्र विचार विचार प्रवाह-१८४

कैलाश आदमी

वाजपेयी के परामर्श व सहयोग से कर रहा हूँ।

श्री दुबे की विशेषता यह रही कि वे विश्व प्रसिद्ध शिक्षाविद डॉ गुलाब चौरसिया के साथ जुड़कर कार्य करते रहे तथा ५ अक्टूबर को यूनेस्को द्वारा प्रकाशित दस्तावेज ‘स्टेटस ऑफ टीचर’ की स्मृति स्वरूप अन्तरराष्ट्रीय शिक्षक दिवस मनाने की परंपरा शुरू की। श्री दुबे डॉ चौरसिया के साथ मानव अधिकार शिक्षा के लिए भी १९९५ से निरंतर समर्पित रहे। श्री दुबे ने मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्य सचिव शरद चंद्र बेहार के साथ कार्य करते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति १९८६ के कार्यान्वयन के लिए निरंतर सक्रिय रूप से कार्य किया।

देश के प्रसिद्ध गांधी वादी विचारक डॉ. सेलम नंजुण्डैय्या सुब्बराव (भाई जी) के साथ हमेशा ही शिक्षकों के कल्याण के लिए प्रेरणास्रोत के रूप में काम करते रहे। चूंकि मैं स्वयं भाईजी के साथ विगत पांच दशकों तक जुड़ा रहा इसलिए मेरा दुबेजी से गहरा नाता रहा। उनका कहना था कि निर्दलीय प्रकाशन को श्री सुब्बराव से प्रेरणा लेते हुए समाजसेवा व शिक्षण कार्य में जुटे रहना चाहिए। चूंकि श्री दुबे मूलतः शिक्षक थे। इसलिए उन्होंने शिक्षा के माध्यम से नई पीढ़ी के मार्गदर्शन हेतु स्वयं को समर्पित कर दिया था। उनका कहना था कि दुनिया में ऐसा कोई नागरिक नहीं है जो यह कह सके कि वह पूरी तरह सुखी है। वस्तुतः सब दुखी हैं। कोई अज्ञान से, कोई नासमझी से और कोई समय या परिस्थितिवश।

पूर्व राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्ण का कहना था कि उन्हें राष्ट्रपति की बजाए एक शिक्षक के रूप में याद किया जाना चाहिए। इसी तरह जब डॉ. अब्दुल कलाम राष्ट्रपति बने तो उन्होंने कहा कि वे चाहते हैं कि उन्हें ना राष्ट्रपति और ना ही एक वैज्ञानिक के रूप में याद किया जाए बल्कि एक शिक्षक के रूप में उन्हें याद किया जाएना तो उनकी आत्मा संतुष्ट रहेगी।

वर्ष १९९६ में घोषित भारत सरकार की शिक्षा नीति के स्थान पर मोदी सरकार ने वर्ष २०२० में नई शिक्षा नीति घोषित की जिसमें शिक्षा का पुराना ढांचा ही विद्यमान है। कहा गया कि केंद्र सरकार यह प्रयास करेगी कि देश में त्रिभाषा फार्मूला लागू किया जाए जिसमें हिंदी व अंग्रेजी के साथ ही क्षेत्रीय व मातृभाषाओं को महत्व मिल सके किंतु आज तक यह संभव नहीं हो सका है इसलिए पुनर्विचार किया जाना आवश्यक है क्योंकि नई नीति शिक्षा के क्षरण को नहीं रोक सकी है।

अंत में मेरी दो काव्य पंक्तियां-
*शिक्षा नीति २०२० नई, तस्वीर पुरानी।
चढ़ नहीं पाई, नई पीढ़ी की जुबानी।।*

बच्चे सीखते हैं – एक शिक्षक के अनुभव

मैं जीवन में शिक्षित होना अत्यंत आवश्यक मानता हूँ। बिना शिक्षा के जीवन को निराधार समझना चाहिए। वर्तमान समय में शिक्षा सभी के लिए अत्यंत आवश्यक है।

सभी बच्चों का शत-प्रतिशत नामांकन एवं ठहराव सुनिश्चित करना आवश्यक है। शिक्षा में गुणवत्तापूर्ण शिक्षण पर विशेष बल दिया जाना चाहिए। शिक्षा से संबंधित सभी आयामों पर गंभीर मंथन होना चाहिए।

बच्चों को रटत प्रणाली का अभ्यास नहीं करवाना चाहिए। इससे उनके सभी कौशलों का समुचित विकास नहीं हो पाता। बच्चों में विश्लेषणात्मक एवं तार्किक सोच विकसित करना अधिक उपयुक्त है। कौशल-आधारित शिक्षा पर जोर देना आवश्यक है, जिससे शिक्षा अधिक प्रभावी बन सके।

व्यावहारिक शिक्षा- शिक्षा को केवल सैद्धांतिक ज्ञान तक सीमित नहीं रखना चाहिए। वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करना आवश्यक है। प्रयोगशाला में प्रयोगों के माध्यम से सीखने और विश्वास को बढ़ावा देना चाहिए। व्यवहारिक शिक्षा को पाठ्यक्रम का अभिन्न हिस्सा बनाया जाना चाहिए।

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन- परीक्षाओं के बजाय बच्चों की दैनिक प्रगति, उनकी सहभागिता तथा निरंतर आकलन के आधार पर मूल्यांकन किया जाना चाहिए। इससे बच्चों की वास्तविक सीखने की प्रक्रिया का सही मूल्यांकन संभव हो पाता है।

शिक्षा केवल ज्ञान का संचरण नहीं है, बल्कि बच्चों के समग्र विकास में योगदान देने की प्रक्रिया है। इसमें शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति सुनिश्चित करना शिक्षक का दायित्व है। शिक्षक को शैक्षिक विकास में प्रभावी भूमिका निभानी चाहिए।

शिक्षा में नवाचार के मेरे स्वयं के अनेक अनुभव रहे हैं। नवाचार बच्चों की जिज्ञासा को बढ़ाता है तथा उन्हें सीखने के प्रति प्रेरित करता है।

विद्यालय में प्रतिदिन सभा आयोजित की जानी चाहिए, जिसमें बालगीत, अभियान गीत, कहानियाँ तथा समसामयिक घटनाओं पर सामूहिक चिंतन एवं विचार-विमर्श किया जाए। इससे बच्चों में आत्मविश्वास, अभिव्यक्ति कौशल और सामाजिक जागरूकता का विकास होता है।

शिक्षक को पूर्व तैयारी के साथ कक्षा में जाना चाहिए। सबसे पहले बच्चों के शैक्षिक स्तर का आकलन करना चाहिए, फिर स्तरानुसार कार्ययोजना बनाकर उसका क्रियान्वयन करना चाहिए। कार्य की समीक्षा अत्यंत आवश्यक है। समीक्षा में चिन्हित बिंदुओं को अगले दिन की कार्ययोजना में शामिल किया जाना चाहिए। यह प्रक्रिया प्रतिदिन अपनाई जानी चाहिए। बच्चों के



सुरेश कुमार वर्मा रातीवाल

साथ कार्य- बच्चों को सामूहिक, उपसमूह एवं व्यक्तिगत कार्य करने के पर्याप्त अवसर मिलने चाहिए। बाल-केंद्रित शिक्षण को बढ़ावा देना चाहिए। बच्चों की आवश्यकताओं को समझकर शिक्षण कार्य करना चाहिए। पाठ्यक्रम के साथ-साथ कला, संगीत, खेल आदि विविधताओं भी करवाई जानी चाहिए, जिससे उनका समग्र विकास संभव हो सके।

भयमुक्त शिक्षा- शिक्षकों का व्यवहार बच्चों के प्रति सौहार्दपूर्ण एवं संवेदनशील होना चाहिए, जिससे बच्चे अपनी बात निःसंकोच होकर शिक्षकों के सामने रख सकें। भयमुक्त वातावरण में सीखना अधिक प्रभावी और स्थायी होता है।

समुदाय की सहभागिता- विद्यालय में समुदाय की सहभागिता आवश्यक है। समुदाय और शिक्षक मिलकर मासिक योजना तैयार करें। विद्यालय में नियमित समुदाय बैठकें आयोजित की जाएँ तथा बच्चों के कार्यों का पोर्टफोलियो समुदाय के समक्ष प्रस्तुत किया जाए। इससे विद्यालय और समाज के बीच विश्वास एवं सहयोग का वातावरण निर्मित होता है।

नई शिक्षा नीति और कौशल विकास- वर्तमान समय में नई शिक्षा नीति 2020 शिक्षा को अधिक कौशल-आधारित, बाल-केंद्रित और अनुभवात्मक बनाने पर बल देती है। शिक्षक का दायित्व है कि वह बच्चों में जिज्ञासा, सृजनात्मकता और समस्या-समाधान की क्षमता का विकास करे, जिससे वे जीवन की चुनौतियों का सामना आत्मविश्वास के साथ कर सकें। डिजिटल संसाधनों, स्मार्ट कक्षाओं एवं शैक्षिक तकनीकों का उचित उपयोग शिक्षण को अधिक रोचक और प्रभावी बना सकता है। हालांकि तकनीक शिक्षक का विकल्प नहीं, बल्कि उसका सहयोगी साधन है।

साथ ही, समावेशी शिक्षा की भावना को भी बढ़ावा देना चाहिए, ताकि प्रत्येक बच्चा, चाहे उसकी सामाजिक, आर्थिक अथवा शारीरिक स्थिति कैसी भी हो, समान अवसर प्राप्त कर सके।

कोई भी बच्चा असफल नहीं होता। शिक्षक को अपने कार्य में निरंतर सुधार और निखार लाने का प्रयास करना चाहिए। मेरे जीवन के चौबीस वर्षों के अनुभव यही बताते हैं कि सभी बच्चे सीख सकते हैं और अवश्य सीखते हैं।

निष्कर्ष- शिक्षा केवल पाठ्यपुस्तकों का ज्ञान नहीं, बल्कि जीवन को समझने और समाज को बेहतर बनाने की प्रक्रिया है। मेरा विश्वास है कि यदि शिक्षक संवेदनशीलता, नवाचार और समर्पण के साथ कार्य करें तो प्रत्येक बच्चा सीख सकता है, आगे बढ़ सकता है और अपने सपनों को साकार कर सकता है। एक शिक्षक के रूप में यही मेरा अनुभव, विश्वास और शिक्षा के प्रति समर्पण है।

- जयपुर, राजस्थान

समाज का मार्गदर्शक हो साहित्य रिश्तों को बचाते हैं बड़े शब्द नहीं, छोटे संस्कार

कहा जाता है कि साहित्य समाज का दर्पण होता है, साहित्य पढ़ने से मनुष्य की विचारधारा पर सीधा प्रभाव पड़ता है। इसीलिए कहा जाता है शिक्षाप्रद और सत्यता पर आधारित साहित्य पढ़ने से मनुष्य का सर्वांगीण विकास होता है।

साहित्य का मुख्य उद्देश्य है समाज का देश का मार्गदर्शन करना। मनुष्य के जीवन की यथार्थ की सच्चाइयों को मानवीय अनुभूतियों को जगाना और परिचित करना साहित्य का ही काम है। साहित्य केवल मनोरंजन का विषय और साधन नहीं है। वह देश काल का अतीत वर्तमान लिखता है भविष्य की ओर संकेत करता है। मानवीय मूल्यों की आलोचना करना और व्याख्यात्मक संदेश देना होता है। समाज का सुधार करना तथा शोषित और पीड़ित, कमजोर जन की आवाज उठाना उसमें सुधारात्मक संदेश देना साहित्य के अंतर्गत ही आता है।

अशिक्षित वर्ग की सोच और संवेदनाओं को जगाना घिसी-पिटी मान्यताओं को परिवर्तनशील बनाना। शिक्षित होने के लिए साहित्य का पढ़ना सुनना अति आवश्यक है। हमारे रामचरितमानस का अध्ययन करने से पढ़ने और सुनने से सामाजिक कार्यकर्ताओं को मार्गदर्शन मिलता है। पारिवारिक मूल्यों का महत्व पता चलता है मर्यादा में रहकर समाज का उत्थान करना सिखाता है। व्यक्तिगत संवेदनाओं का लेखन द्वारा चर्चा करना होना चाहिए। संघर्ष, प्रेम, श्रृंगार, सौंदर्य,प्रकृति प्रेम, जैसे विषय साहित्य के द्वारा ज्ञान देते हैं।

समाज में आदर्श स्थापित करना, एकता और बंधुत्व का मार्ग प्रशस्त करना होता है। साहित्य का उद्देश्य प्रगतिशील होना चाहिए। आजकल हमारे यहां साहित्य कई विधाओं में धाराओं में लिखा जा रहा है, जैसे कहानी, कविता, आलेख, समीक्षा



शीला श्रीवास्तव, भोपाल

आदि। साहित्य के द्वारा राजनीति पर अच्छा लेखन हो रहा है जिसका प्रभाव देश के वातावरण पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। नकारात्मक विचारधारा का लेखन द्वारा ही खंडन किया जाता है।

लेखन करना पढ़ना पढ़ाना साहित्य के अध्ययन से ही किया जाता है। आजकल अधिकतर देखा जा रहा है कि कुछ आधुनिक विचारधारा के लेखकों ने साहित्य का रूप ही बदल दिया हैं उन्हें केवल अपने व्यक्तिगत लेखन की पब्लिसिटी करना ही उद्देश्य मात्र है चाहे वह साहित्य समाज को उत्थान की ओर ले जाए अथवा पथ भ्रष्ट करें, युवाओं को अपनी ओर आकर्षित करना है।

हमारी पिछरों में पहले अच्छे लेखकों की पुस्तक पर पिछर बनती थीं समाज को सकारात्मक सोच देती थीं परंतु आजकल बदले की भावनाओं को पश्चिमी संस्कृति से ओतप्रोत कहानी लिखी जाती है जोकि भारतीय संस्कृति के विपरीत होती है। यह कह सकते हैं की साहित्य का उद्देश्य यह नहीं होना चाहिये। अभी भी कुछ संस्थाएं ऐसी हैं जो अपने यहां से उद्देश्य पूर्ण संदेश आत्मक पत्रिकाएं निकालती हैं, जिससे परिवार और समाज को सकारात्मक सोच वाली विचारधारा मिलती है मर्यादा, परिवार का महत्व आध्यात्मिक उत्थान की ओर मार्ग प्रशस्त करती हैं। साहित्य का उद्देश्य सदैव प्रगतिशील सकारात्मक सोच तथा राष्ट्र,समाज के प्रति विकासशील शिक्षाप्रद होना चाहिए। साहित्य को कभी बांधा नहीं जा सकता, वह सामाजिक,पारिवारिक, राजनैतिक, प्राकृतिक गतिविधियों के अनुसार बदलता रहता है जो मनुष्य को मानवीय गुणों को समझने और समझाने की प्रतिक्रिया देकर लिखा जाता है वह साहित्य उद्देश्य पूर्ण कहलाता है।

वर्तमान समय की सबसे भयावह महामारी अस्पतालों में नहीं, घरों के भीतर पल रही है। इसका न कोई परीक्षण है, न तापमान, न कोई चिकित्सकीय रिपोर्ट। यह चुपचाप रिश्तों में उतरती है और उनकी धड़कनें धीमी कर देती है। इसका नाम है— संस्कारहीन रिश्ते। समाचारों की सुखिचों हत्या, तलाक, पारिवारिक कलह और टूटते घर दिखाती हैं, पर उन घटनाओं के पीछे पसरा वह सन्नाटा नहीं दिखातीं, जहाँ कभी अपनापन साँस लेता था। असली त्रासदी तब होती है, जब अपने ही लोग एक-दूसरे के लिए अजनबी बन जाते हैं। संस्कार रिश्तों की रखवाली छोड़ दें तो मकान तो खड़े रहते हैं, कमरे भी भरे रहते हैं—बस घर भीतर से वीरान हो जाता है।

कभी रिश्ते मिट्टी जैसे थे—नरम, लचीले, एक-दूसरे में घुले हुए। संस्कार वह पानी थे, जो बिखरे कणों को जोड़कर परिवार गढ़ते थे। आज वही मिट्टी सूख रही है। अहंकार की एक चुभन, स्वार्थ की एक परत और सुविधा की एक आंधी रिश्तों में दगार डाल देती है। हमने संबंधों को भावनाओं से नहीं, फायदे से तौलना शुरू कर दिया है—सुविधा रही तो रिश्ता रहा, सुविधा गई तो अपनापन भी गया। अदालतों के पारिवारिक विवाद और रोज की सुखिचों इसी बिखराव के कण हैं। सवाल यह नहीं कि रिश्ते क्यों टूट रहे हैं; सवाल यह है कि उन्हें बाँधने वाला संस्कारों का पानी हमारी हथेलियों से कब रिस गया।

आज परिवार एक छत के नीचे रहता है, पर एक-दूसरे के भीतर नहीं उतरता। खाने की मेज पर थालियाँ साथ होती हैं, मोबाइल भी—बस संवाद नहीं होता। बच्चे सवाल लेकर बड़ों तक पहुँचने के बजाय स्क्रीन पर उत्तर खोजते हैं और बुजुर्ग घर में रहकर भी बातचीत से बाहर हो जाते हैं। संस्कार अब व्यवहार में कम, किताबों,



कृति जैन

भाषणों और त्योहारों की तस्वीरों में अधिक दिखाई देते हैं। फिर किसी दिन खबर आती है—किसी वृद्ध की मृत्यु का पता कई दिनों बाद चला। सुखी कुछ पल ठहरती है, मगर उसके पीछे वर्षों का अकेलापन, दरवाजे पर टिकी आँखें और अपनों के स्पर्श को तरसते हाथ छूट जाते हैं। संस्कार जीवित होते तो बुजुर्ग खबर नहीं बनते—घर की सबसे सुरक्षित छव बन रहे होते।

प्रेम अब अपनापन कम, अपेक्षाओं का हिसाब अधिक बनता जा रहा है। इच्छा पूरी हुई तो मुस्कान, टूटी तो शिकायत; अपेक्षा टूटी तो रिश्ता भी डगमगा गया। कभी एक माफ़ी वर्षों का साथ बचा लेती थी, आज एक संदेश, ब्लॉक या अनफॉलो वर्षों की निकटता मिटा देता है। मतभेद समस्या नहीं, संवाद का इम्तिहान हैं; दुख यह है कि हमने मतभेद के बाद बात करना छोड़ दिया। गलती मानना कमजोरी नहीं, रिश्ते की ताकत है; माफ़ी माँगना हार नहीं, प्रेम का साहस। इसीलिए पहला तूफ़ान आते ही रिश्ते की छत उड़ जाती है—उसे थामने वाली संस्कारों की कड़ियाँ पहले ही टूट चुकी होती हैं।

शहरों की चमक हमें उस आँगन से दूर ले गई, जहाँ कभी परिवार साथ बैठता था। दादा-दादी की कहानियाँ किस्से नहीं, धैर्य, क्षमा, त्याग और सम्मान की पाठशाला थीं। आज आँगन की जगह बालकनी, कहानियों की जगह रील्स और साथ की जगह अलग-अलग स्क्रीन हैं। बच्चे तेज भागना सीख रहे हैं, ठहरकर सुनना नहीं। माता-पिता सुविधाएँ जुटाने की दौड़ में बच्चों की आँखों की थकान और मन की चुप्पी पढ़ना भूल रहे हैं। फिर वही बच्चे बड़े होकर माता-पिता को वृद्धाश्रम छोड़ देते हैं और यह एक खबर बन जाती है। इस महामारी का सबसे खतरनाक लक्षण है—उसका दिखाई न देना। न बुखार, न खाँसी, न कोई रिपोर्ट; फिर भी परिवार भीतर से

बीमार हो जाता है। आवाजों से अपनापन घटना है, बातचीत औपचारिक होती है और एक ही छत के नीचे लोग अपने-अपने एकांत में सिमट जाते हैं। साथ रहते हुए भी अकेलापन बढ़ता जाता है। समाचार चैनल घटना दिखा सकते हैं, आँकड़े गिना सकते हैं, बहस कर सकते हैं; मगर उस संस्कारहीनता को नहीं पकड़ सकते, जो टूटते रिश्तों की जड़ में पलती है। फिर भी इस बीमारी का इलाज संभव है, क्योंकि संस्कार कोई पुरानी चीज नहीं, बल्कि रोजमर्रा के छोटे-छोटे व्यवहार हैं। इलाज बाहर से नहीं, भीतर से शुरू होगा। बिना कारण मुस्करा देना, किसी की बात बीच में न काटकर सुन लेना, गलती पर माफ़ी माँग लेना, बुजुर्ग के हाथ छूकर आशीर्वाद लेना, बच्चे के सवाल को महत्व देना और क्रोध के क्षण में कठोर शब्द रोक लेना—यही रिश्तों की असली वैकसीन हैं। रिश्तों की सूखी मिट्टी को फिर से गीला करना होगा। संस्कारों को उपदेशों की दीवार से उतारकर व्यवहार की जमीन पर लाना होगा। घर में थोड़ा समय, थोड़ा धैर्य और थोड़ा अपनापन लौट आए, तो बहुत-से रिश्ते टूटने से पहले ही बच सकते हैं।

रिश्ते क्यों टूट रहे हैं, यह पूछने से पहले यह देखना होगा कि उन्हें बचाने के लिए हम अपने भीतर क्या बदल सकते हैं। न्यूज की सुखिचों बदलती रहेंगी, घटनाएँ गुजर जाएँगी; मगर टूटा विश्वास, अकेला बुजुर्ग और भीतर से बुझा रिश्ता खबर बदलने से वापस नहीं आएगा। शुरुआत किसी बड़े अभियान से नहीं, घर की छोटी-सी संवेदना से होगी—किसी अपने को सुन लेने से, रुठे को मना लेने से, बुजुर्ग के पास बैठ जाने से, बच्चे के मन को समझ लेने से और अपनी गलती पर झुक जाने से क्योंकि रिश्ते बड़े शब्दों से नहीं, छोटे संस्कारों से बचते हैं। सुखिचों से आगे देखिए—शायद आपके अपने घर में अभी भी एक रिश्ता आपकी प्रतीक्षा कर रहा है।

-बड़वानी (मप्र)

संपादक: प्रिंस अभिशेख अज्ञानी (९८२६४२२८२०)

प्रेस पंजीयन एम.पी.एच.आई.एन./२०११/४८५६५

निष्पक्षता, निर्वैरता व निडरता का दैनिक प्रवक्त

निर्दलीय

www.nirdaliya.com ई-मेल: nirdaliyadaily@gmail.com

वर्ष-५४/१६

भोपाल, ६ सितंबर, डाक ७ सितंबर २०२६

मूल्य -1+1/-संप्रेषण /स्वैच्छिक

नेपाल की अकल्पनीय आपदा से सीख

निर्दलीय के लिए काठमांडू से विनोदकुमार विमल

नेपाल की त्रासदी किसी एक जगह तक सीमित नहीं है; यह एक ऐसी भीषण आपदा है जिसने पूरे देश को रुला दिया है ।

26 अगस्त की सुबह भोटेकोशी नदी में अचानक आई बाढ़ से हुई तबाही का वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता । स्याफ्रूबेसी, टिमुरे, रसुवागढ़ी कस्टम्स और बेत्रावती जैसी बस्तियाँ न केवल लोगों की आँखों के सामने बह गईं, बल्कि सैकड़ों नागरिक लापता भी हो गए । बागमती प्रांत के चार जिलों -- रसुवा, नुवाकोट, धादिंग और चितवन में हुए मानवीय और भौतिक नुकसान इतने बड़े हैं कि उन्हें पैसों में नहीं मापा जा सकता । बाजार बह गया; बस्तियों के साथ-साथ घर भी बह गए और लोग अपने घरों समेत भोटे कोशी नदी में समा गए । पल भर में ही, एक मटमैले तूफानी सैलाब ने उन चेहरों को नालत लिया जो कुछ ही पल पहले हँस-खेल रहे थे, उन घरों को जो जान से भी ज्यादा प्यारे थे, और अनगिनत इंसानी सपनों को भी । यह त्रासदी किसी एक जगह तक सीमित नहीं है; यह एक ऐसी भीषण आपदा है जिसने पूरे देश को रुला दिया है ।

नेपाल के राष्ट्रीय दैनिक अखबार ‘गोरखापत्र’ में भाद्र 20 (5 सितंबर) को छपी एक रिपोर्ट के अनुसार, रसुवा के भोटेकोशी इलाके में आई विनाशकारी बाढ़ के बाद नेपाल पुलिस ने खोज, बचाव, शव प्रबंधन और राहत कार्यों को तेज कर दिया है। नेपाल पुलिस की ताजा जानकारी के मुताबिक, बाढ़ प्रभावित इलाकों में 7,000 से ज्यादा पुलिसकर्मियों को तैनात किया गया है । बाढ़ प्रभावित इलाकों में खोज और बचाव अभियान के दौरान बड़ी संख्या में लोगों को बचाया गया है और खबर है कि 1,344 शव बरामद किए गए हैं । जानकारी के मुताबिक, बरामद शवों में 52 लड़के, 33 लड़कियाँ, 269 महिलाएँ और 489 पुरुष शामिल हैं । मृतकों की पहचान के लिए डीएनए सैंपल इकट्ठा करने की कोशिशें भी तेज कर दी गई हैं । खबर है कि 1,260 मृतकों और 972 मृतकों के रिश्तेदारों से डीएनए सैंपल लिए



विनोद कुमार विमल

होलिडिंग सेंटरर्स में 3,655 लोगों को रखा गया है । इसके अलावा, पहचान न हो पाने वाले लोगों और शवों की जानकारी वेबसाइट पर अपलोड कर दी गई है । बाढ़ के बाद, पुलिस ने लापता लोगों की तलाश, घायलों को बचाने, राहत सामग्री बांटने, मृतकों के प्रबंधन और बंद सड़कों को खुलवाने जैसे कामों को प्राथमिकता दी है । इसके अलावा, रिपोर्टों से पता चलता है कि प्रभावित समुदायों के लिए जागरूकता बढ़ाने वाले 111 कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनमें 41,838 लोगों ने हिस्सा लिया । नेपाल लाइव टेलीविजन पर प्रसारित खबरों के अनुसार, 7,570 घर पूरी तरह से नष्ट हो गए हैं । 55 किलोमीटर सड़कें, 37 मोटर-योग्य पुल और 68 सस्पेंशन पुल क्षतिग्रस्त हुए हैं । उसी टेलीविजन चैनल पर प्रसारित समाचार के अनुसार, अनुमान है कि खेती योग्य 1,806 हेक्टेयर जमीन के नष्ट होने से 7,686 मीट्रिक टन अनाज के उत्पादन का नुकसान होगा । इसी तरह 783 मेगावाट बिजली के उत्पादन पर भी असर पड़ है ।

भयानक बाढ़ के बाद प्रबंधन के लिए सहायता देने वाले देश: नेपाल के भोटेकोशी और रसुवा इलाकों में आई भयानक बाढ़ और जमीन खिसकने की घटनाओं के बाद, कई मित्र देश बचाव, राहत और बाढ़ नियंत्रण व प्रबंधन के लिए तेजी से मदद पहुंचा रहे हैं । मदद देने वाले मुख्य देश इस प्रकार है -- भारत सरकार ने बाढ़ प्रभावित इलाकों में बचाव कार्यों के लिए नेपाल में 24 सदस्यों वाली सुरंग बचाव विशेषज्ञ टीम और 19 सदस्यों वाली फोरेंसिक टीम भेजी है । भारतीय वायु सेना की उड़ानों के जरिए काठमांडू में लगातार राहत सामग्री पहुंच रही है और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नेपाल को हर ज़रूरी मदद देने का वादा किया है । चीन,

नेपाल के साथ बाढ़ के खतरों, हिमस्खलन और भोटे कोशी नदी क्षेत्र में ग्लेशियल झीलों की स्थिति के बारे में रियल-टाइम मौसम और जल-विज्ञान संबंधी डेटा साझा कर रहा है । इसके अलावा, चीन ने आपातकालीन सामान भी सौंपा है, जिसमें नौ सदस्यों वाली बचाव टीम, बेली ब्रिज, सोलर लाइट और जर्नरेटर शामिल हैं । चीन, हिस्सा और केरुंग बॉर्डर क्रॉसिंग के जरिए तिब्बत क्षेत्र में फँसे नेपाली नागरिकों की वापसी में भी मदद कर रहा है । हाइड्रोपावर प्रोजेक्ट की सुरंगों में फँसे लोगों की खोज और तकनीकी बचाव अभियान चलने के लिए नेपाली सेना के साथ दक्षिण कोरिया के विशेषज्ञों को भी तैनात किया गया है । ऑस्ट्रेलिया, अमेरिका और यूनाइटेड किंगडम ने बाढ़ प्रभावित इलाकों में बचाव कार्यों में तेजी लाने के लिए हाई-कैपेसिटी वाले ड्रोन, एक्सपर्ट टीमों और राहत सामग्री उपलब्ध कराई हैं । जापान, संयुक्त अरब अमीरात, कतर, सिंगापुर, कनाडा, बांग्लादेश और यूरोपीय संघ समेत 23 से ज्यादा देश और दान देने वाली एजेंसियां तकनीकी उपकरण, लॉजिस्टिकल सहायता और आर्थिक मदद मुहैया करा रही हैं । इसी तरह, वर्ल्ड बैंक और एशियन डेवलपमेंट बैंक जैसे वित्तीय संस्थानों ने तत्काल राहत देने के साथ-साथ, भविष्य में बाढ़ को नियंत्रित करने के लिए बेकाली वार्निंग सिस्टमक स्थापित करने और मजबूत बुनियादी ढांचा तैयार करने के लिए लंबे समय तक मदद का वादा किया है ।बाढ़ पीड़ितों को मानवीय सहायता पहुँचाने के क्रम में, बॉलीवुड अभिनेता सोनू सूद ने अपनी संस्था ‘सूद चैरिटी फ़ाउंडेशन’ के जरिए 2,000 कंबल, कपड़े, सूखा राशन और महिलाओं के लिए हाइजीन से जुड़े सामान उपलब्ध कराकर मदद की है । इसके अलावा, उन्होंने बाढ़ से प्रभावित उन लोगों के लिए ‘घर बनाने का संकल्प’ लेने की पहल भी शुरू की है, जिनके घर बाढ़ में नष्ट हो गए हैं।

भू-वैज्ञानिक और भू-आकृतिक कारण: भाद्र 10 (26 अगस्त) को भोटेकोशी में आई बाढ़ को सिर्फ एक आम मौसमी बाढ़ समझना, उसकी असलियत को न समझ पाने जैसा है । यह सिर्फ पानी का

रचना साप्ताहिकी

डॉ.शिव कुमार मिश्र

सोम/ कनिका
राम कृथा से,
मिटता है संशय।
फिर जीवन में,
नहीं रहता भय।
मंगल/ कनिका
मिले हुए दो मन,
कभी नहीं फटेंते।
फटे हुए दो
मन कभी नहीं मिलते।
(बुध/कनिका)

है यदि ज्वाला प्रेम की,
तो कोई न सके बुझाया।
बिना तेल व बातीं विना,
विन माचिस जल जाय।

गुरु/ कनिका
दिन हुआ तो,
कुछ बात हुई।
रात बीत गई,
सब बात गई।
शुक्र/कनिका
अधर्म अति बढ़ने पर,
धर्म हानि होने पर।
कृष्ण हुए आज पैदा,
भारत की भूमि पर।

शनि/कनिका
जो दोगे वो मिलेगा,
मान तुम दोगे
तो सम्मान मिलेगा।
प्यार यदि दोगे तो,
अति प्यार मिलेगा।
विश्वास यदि दोगे,
तो विश्वास मिलेगा।
दान यदि तुम दोगे,
तो दान ही मिलेगा।
ज्ञान यदि दोगे तो,
ज्ञान ही मिलेगा।
जो कुछ तुम दोगे,
वह जरूर मिलेगा।

रवि/कनिका
छोटे पेड़ कभी नहीं होते,
छाहे जितना जोर लगाएं।
जिस सुरक्षामें गए लगाएँ,
उसे लोग उखाड़ ले जाएँ।
कभी पशु,कभी बकरियाँ,
आसानी से उन्हें चर जायें।
दससाल की सेवा वाद ही,
उन्पे चाहे फल लग पाएँ।

–ग्वालियर, भारत

संस्थापक संपादक -कैलाश श्रीवास्तव ‘आदमी’ (९४२४४३४०१)	संपादक -प्रिय अभिषेक (प्रिंस अभिशेख अज्ञानी) (९८२६४२२८२०)
सलाहकार/संरक्षक- सेठ रामनिवास गुप्ता, कविता मल्होत्रा (नई दिल्ली), मधुबाला पांडेय (भोपाल)	
मुख्य संरक्षक पवन कुमार जैन (बदनावर)	प्रबंध संपादक अशोक निर्मल
स्वामी निर्दलीय प्रकाशन एवं स्वा्वाधिकारी कैलाश श्रीवास्तव के लिए संपादक प्रिय अभिषेक (प्रिंस अभिशेख अज्ञानी)' (दृष्टि जन संगठन) द्वारा निर्दलीय प्रेस भोपाल द्वारा जेपन ऑफसेट के सहकार्य से मुद्रित तथा एफ-116/7 शिवाजी नगर,भोपाल -462016 से प्रकाशित	साहित्य संपादक- सरिता गर्ग ‘सिर’ (जयपुर)

स्तर बढ़ने की घटना नहीं थी; बल्कि यह एक ऐसी घटना थी जिसमें ऊँचे हिमालय से शुरू हुई एक जबरदस्त भू-वैज्ञानिक प्रक्रिया ने कई दूसरी प्रक्रियाओं को एक कड़ी शुरू कर दी । जैसे-जैसे इसका असर नीचे की ओर बढ़ा, यह आखिरकार एक विनाशकारी सैलाब में बदल गया, जो भोटेकोशी से होता हुआ त्रिशूली नदी तक फैल गया । इसलिए, असली वजह को समझने के लिए सिर्फ नदी में बहते पानी को ही नहीं, बल्कि पहाड़ों से लेकर नदी तक एक के बाद एक सक्रिय होने वाली प्राकृतिक प्रक्रियाओं की लंबी कड़ी को समझना भी जरूरी है ।

अब तक हुई वैज्ञानिक स्टडीज से पता चलता है कि यह घटना चीन की तरफ हिमालय के ऊंचे इलाक़े में ग्लेशियर के एक बड़े हिस्से के टूटने और गिरने यानी ग्लेशियर के बड़े पैमाने पर ढहने की वजह से हुई थी । यूनाइटेड स्टेट्स जियोलॉजिकल सर्वे के एक विश्लेषण के अनुसार, शुरू में जो भूकंपीय संकेत मिला था, वह असल में चट्टान और बर्फ के एक विशाल हिमस्खलन और उससे निकले मलबे के बहाव के कारण था; इससे चलावा एक भूकंप के बराबर लहरें पैदा हुईं । ऊंचे पहाड़ी इलाकों से नीचे आने वाली बर्फ, चट्टानों, मिट्टी और गाद-युक्त पानी के मिश्रण ने नदी प्रणाली में रुकावट पैदा कर दी। इसके बाद, इस रुकावट के पीछे पानी और मलबा जमा हो गया। जब यह प्राकृतिक रुकावट कमजोर पड़ी, तो जमा हुआ पानी और मलबा एक साथ तेजी से नीचे की ओर बहने लगा।

हिमालय की संकरी घाटी से तेजी से गुजरते हुए, इसने अपने रास्ते में और ज्यादा पत्थर, मिट्टी, तलछट और पानी इकट्ठा कर लिया, जिससे इसका आकार और विनाशकारी ताकत बढ़ गई । ऊँचे हिमालय में बर्फ और चट्टानों के गिरने से धीरे-धीरे नदी का बहाव रुक गया, जिससे पानी और तलछट जमा होने लगे; जब यह प्राकृतिक रुकावट आखिरकार टूट गई, तो पत्थर और मिट्टी का एक तेज बहाव निकला, एक भयानक और विशाल सैलाब जो एक विनाशकारी बाढ़ में बदल गया । इस घटना ने नदी के बहाव की दिशा में लगभग 25 किलोमीटर आगे तक के इलाकों पर बहुत बुरा असर डाला छ इसीलिए, भोटेकोशी की बाढ़ को सिर्फ पानी का सामान्य बहाव नहीं माना जा सकता । यह एक के बाद एक होने वाली आपदाओं की एक श्रृंखला थी घटनाओं की एक लंबी कड़ी जिसमें एक प्राकृतिक प्रक्रिया ने दूसरी प्रक्रिया को जन्म दिया । और यहीं अगस्त 26 को हुई घटना से सबसे महत्वपूर्ण वैज्ञानिक सीख मिलती है। प्रकृति में आपदाएँ किसी एक कारण से नहीं होतीं; बल्कि, प्रक्रियाओं की एक श्रृंखला

मिलकर एक बड़ी तबाही का रूप ले सकती है ।

ग्लेशियर के ढहने से मिला संकेत: बाढ़ से पहले मिले भूकंपीय सिग्नल ने शुरू में उलझन पैदा कर दी थी । कुछ शुरुआती रिपोर्टों में यह अनुमान लगाया गया था कि भूकंप आया था और शायद उसी वजह से हिमस्खलन हुआ हो । हालाँकि, बाद के विश्लेषण से स्थिति स्पष्ट हो गई । लंबे समय तक चलने वाली भूकंपीय तरंगों के और विश्लेषण के बाद, यूनाइटेड स्टेट्स जियोलॉजिकल सर्वे ने यह निष्कर्ष निकाला कि जिस सिग्नल को शुरू में भूकंप माना गया था, वह असल में चट्टान और बर्फ के एक विशाल हिमस्खलन और उससे बने बहाव के कारण पैदा हुआ था । दूसरे शब्दों में, पहाड़ का एक बहुत बड़ा हिस्सा इतनी जबरदस्त ऊर्जा और तीव्रता के साथ ढह गया कि भूकंप मापने वाले यंत्रों ने उससे पैदा हुई हलचल को एक भूकंपीय घटना के तौर पर दर्ज किया छ यह बात अपने आप में बहुत असाधारण है । आम तौर पर हम भूकंप को टेक्टोनिक हलचल के संदर्भ में समझते हैं । लेकिन, भोटेकोशी की घटना ने यह दिखाया है कि पहाड़ी सतह पर मिट्टी, चट्टान या बर्फ के बड़े हिस्सों की भारी हलचल भी भूकंप मापने वाले यंत्रों पर शक्तिशाली संकेत दर्ज करा सकती है।

घटना की तात्कालिक वजह चाहे जो भी हो, इसके लंबे समय के जोखिमों के संदर्भ को समझना जरूरी है । यह इसलिए अहम है क्योंकि हमें यह पछने की जरूरत है कि हिमालय अस्थिर क्यों हो रहा है; इस सवाल के जवाब में जलवायु परिवर्तन को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता छ भोटेकोशी में आई बाढ़ के लिए सिर्फ और सिधे तौर पर जलवायु परिवर्तन को ही एकमात्र कारण बताना वैज्ञानिक रूप से सही नहीं है । हालाँकि, इस बात को मानना ज़रूरी है कि बढ़ता तापमान, ग्लेशियर का पीछे हटना, ग्लेशियर वाली झीलों का फैलना, पर्माफ्रॉस्ट का पिघलना और ऊँचाई वाले पहाड़ी ढलानों की स्थिरता में बदलाव, जोखिम की पूरी स्थिति को बदल रहे हैं ।

पहाड़ों पर आपदाओं का जोखिम और आगे का रास्ता: हिंदू कुश-हिमालय क्षेत्र दुनिया के उन इलाकों में से एक है, जहाँ बढ़ता तापमान और क्रायोस्फीयर में बदलाव लंबे समय के जोखिमों को बढ़ा रहे हैं । इंटरनेशनल सेंटर फॉर इंटीग्रेटेड माउंटैन डेवलपमेंट ने लगातार इस बात पर जोर दिया है कि हिमालयी क्षेत्र में बढ़ता तापमान ग्लेशियल झीलों की संख्या और उनसे जुड़े खतरों को बढ़ा रहा है । संस्था का कहना है कि इन खतरों से निपटने के लिए सिर्फ घटना

के बाद बचाव और राहत कार्यों पर ध्यान देने के बजाय, सक्रिय जोखिम प्रबंधन की जरूरत है ।

भोटेकोशी पर हुई विनाशकारी घटना को सिर्फ एक असाधारण बाढ़ मानना, उसके असली महत्व को कम करके आंकना होगा । यह एक गंभीर घटना है जो कई चीजों के बीच आपसी संबंध को दिखाती है-- जैसे, बदलते हिमालय, जलवायु परिवर्तन से बढ़ते जोखिम, शुरुआती चेतावनी देने वाले अपर्याप्त सिस्टम, सीमा-पार प्राकृतिक खतरें, जमीन के खतरनाक इस्तेमाल के तरीके और हमारी आपदा प्रबंधन क्षमता । हिमालय स्थिर दिखते हैं, लेकिन असल में हिमालयी सिस्टम ऐसा नहीं है । ग्लेशियर बदल रहे हैं, ग्लेशियल झीलों की स्थिति में बदलाव आ रहा है, पर्माफ्रॉस्ट पिघल रहा है, चट्टानी ढलानों की स्थिरता बदल रही है और नदी प्रणालियों में नए जोखिम पैदा हो रहे हैं । इसलिए, भविष्य में हिमालय से जुड़े जोखिमों का अनुमान सिर्फ पुराने अनुभवों के आधार पर नहीं लगाया जा सकता; इसके लिए नए विज्ञान, नए डेटा और जोखिम प्रबंधन के नए तरीकों की जरूरत है । 26 अगस्त को हुईं भयानक भोटेकोशी आपदा ने प्राकृतिक प्रक्रियाओं की विनाशकारी शक्ति को उजागर किया । हालाँकि 28 अगस्त की घटनाओं ने एक संकेत का अंत किया, लेकिन उन्होंने संभावित नए खतरों के प्रति भी आगाह किया । किसी और चेतावनी का इंतज़ार करना समझदारी नहीं होगी । हाँ, गई हुईं जानें वापस नहीं लाई जा सकतीं । न ही बह गईं बस्तियाँ और नष्ट हुईं संरचनाओं को पहले जैसी हालत में लाया जा सकता है । लेकिन उस नुकसान की कीमत पर भविष्य को सुरक्षित बनाया जा सकता है । इसके लिए, भोटेकोशी की घटना को सिर्फ एक त्रासदी के तौर पर देखना काफ़ी नहीं है । इसे नेपाल के माउंटेन साइंस, क्लाइमेट पॉलिसी, डिजास्टर गर्नेसंग, इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट, ट्रांसबार्ड्री सहयोग और राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति के नज़रिए को नए सिरे से तय करने की शुरुआत के तौर पर देखा जाना चाहिए । आगे होने वाले पुनर्निर्माण की प्रक्रिया से एक बात साफ़ होनी चाहिए: हम सिर्फ एक टूटे हुए नेपाल को फिर से नहीं बना रहे हैं, बल्कि एक ऐसे नेपाल को बनाने की कोशिश कर रहे हैं जो भविष्य में दोबारा कभी न ढहे । आखिरकार, भोटेकोशी ने हमारे सामने एक अहम सवाल खड़ा कर दिया है - क्या हम किसी और आपदा का इंतज़ार कर रहे, या आपदा आने से पहले ही जोखिमों को कम करने की कोशिश करेंगे ? इस सवाल का जवाब ही भोटेकोशी की घटना के बाद पैदा हुए संकेत और नए नेपाल के भविष्य को तय करेगा।

पीपल, नीम व जामुन के वृक्ष रोपित किये गये

भारतीय मजदूर संघ ने मनाया पर्यावरण दिवस



दैनिक निर्दलीय संवाद भोपाल। हेवू भारतीय मजदूर संघ ने पर्यावरण दिवस मनाया। इस अवसर पर भारतीय मजदूर संघ के अखिल भारतीय मंत्री रामनाथ गणेशे ने कहा कि भारतीय मजदूर संघ अमृता देवी बिश्नोई समाज को पर्यावरण के प्रेम के प्रति समर्पित भाव दिया । 20 और 9 सिद्धांत प्रतिपादित करने वाले बिश्नोई समाज से अमृता देवी ने पर्यावरण के प्रति

पेड़ों की रक्षा के लिए 367 महिला पुरुष पेड़ पर लिपट गये थे। राजा के आदेश पर पेड़ों सहित उन लोगों को काट दिया गया। इससे मचे हाहाकार से राजा को अपनी भूल का पश्चाताप हुआ और उन्होंने बिश्नोई समाज को पर्यावरण के प्रेम के प्रति समर्पित भाव दिया । 20 और 9 सिद्धांत प्रतिपादित करने वाले बिश्नोई समाज से अमृता देवी ने पर्यावरण के प्रति

सामाजिक भाव दिखाया। इस बार रक्षाबंधन 28 अगस्त को होने के कारण हेवू भारतीय मजदूर संघ ने 5 सितंबर को पर्यावरण दिवस मनाया। सैकड़ों कार्यकर्ताओं द्वारा मियावाकी पद्धति से वृक्षारोपण किया गया । पीपल, नीम व जामुन के वृक्ष रोपित किये गये। इस अवसर पर प्रदीप अग्रवाल वरिष्ठ कार्यकर्ता, कार्यकारी अध्यक्ष लक्ष्मण पटवा एवं पर्यावरण

संयोजक अरुण चौकीकर ने अपने अभिमत रखे । वृक्षारोपण में डॉ पंकज भारती एवं उनके समूह विशेष सहयोग दिया। मियावाकी वन विशेषज्ञ डॉ? पंकज भारती ने भेल के कर्मचारियों एवं मजदूर संघ के पदाधिकारियों को मियावाकी वन की विशेषता से परिचित कराया। पिपलानी हार्टिकल्चर से दीपक जोशी एवं उनके समूह का विशेष सहयोग रहा ।

दृष्टि से सृष्टि तक-

‘मैं’ से ‘हम’ तक की यात्रा

श्याम सुन्दर शर्मा

दृष्टि से सृष्टि का आनंद लेना है, तो सृष्टि को नजदीक से देखना होगा। और सृष्टि को देखने के लिए, मन से ‘मैं’ को निकालना होगा। ‘मैं’ जब तक मन में है, दृष्टि धुंधली है, सृष्टि का आनंद अधूरा है। ‘मैं’ प्रतिस्पर्धा लाता है, ‘मैं’ घमंड पैदा करता है, ‘मैं’ दुर्भावना और द्वेष को जन्म देता है। पद है, पैसा है, प्रतिष्ठा है, दौलत है, शोहरत है, ताकत है! पर मन में ‘मैं’ है तो सब कुछ होकर भी आप कुछ नहीं हैं। ‘मैं’ मिटेगा तो क्या बचेगा?

‘हम’ का भाव बचेगा हमारा, हम सबका भाव।

इंसानियत से बड़ा कोई धर्म नहीं, इंसानियत से बड़ा कोई समाज नहीं, इंसानियत से बड़ी कोई जाति नहीं, इंसानियत से बड़ा कोई परिवार नहीं।

आपको जीवन में जो भी रूप मिला है -

महिला, पुरुष या अन्य,

उस रूप को सार्थक करना है तो कर्म से करना होगा। और कर्मों में सबसे बड़ा कर्म है -

इंसान होकर, इंसान से इंसानियत का व्यवहार करना।

जब तक मन में जीव मात्र के प्रति स्नेह, प्रेम और सद्भावना है,

तब तक ही मान-सम्मान है।

जो फल आपको अपने कर्म से मिले,

उसे ‘मैंने पाया है’ कहकर नहीं,

‘हम सबका है’ कहकर देखिए,

उसका आनंद कई गुना बढ़ जाएगा।

जीवन का सार है - मन से ‘मैं’ को मिटा दो,

तो आपको दृष्टि सम्पूर्ण सृष्टि को समझ लेगी।

क्योंकि इंसानियत से ही दृष्टि है,

और दृष्टि से ही सृष्टि के आनंद की सृष्टि है।

जो कोई धर्म समाज समाज वर्ग की

स्वयं बात करते सार्वजनिक रूप से

वह स्वयं अपने आप से

पूछे जाने समझे की इंसानियत

महत्वपूर्ण है बिना इंसानियत के

सब कुछ अधूरा है जो कुछ

समझाया जाता है बताया जाता है

बोला जाता है यह सब कुछ कुछ स्वार्थ है

के कारण विशेष प्रयोजन के कारण काह जाता है

इसको स्वयं से समझने की आवश्यकता है कोई और से नहीं

-बैरसिया मार्ग, भोपाल